

## पद १६३

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी)

ग्यान गुरु उपदेसा सुनले हरदम । जडचेतन की गुडिया बोले तुम  
हम । जपति अजपा माला सोहं सोहं ॥ध्रु. ॥ जड भूतनका पिंजरा  
महाराजानाम । जीवपंछी गारोडा फिरता सबधाम । फिर फिर  
जनमको धाया मिठु आत्माराम । सबद गुरु मुख जाना एक राम  
ही राम ॥१॥ जडचेतन बिन जगमे कोई जना मरा । मन भटका

भंडवाडा मैं तूं तेरा मेरा । भुगति मुगति जूं सपना क्या भला बुरा ।  
लटकी चौसर बाजी ना जीता हारा ॥२॥ क्यों डर लंडी माया  
दिलकी धुल झडक । उठ सुन बेद ढंडोरा ब्रह्म हो फडक ।  
सकलमती हम संतो बोली बेधडक । चिन्मार्ताण्ड प्रकाश दृश्य  
की झलक ॥३॥